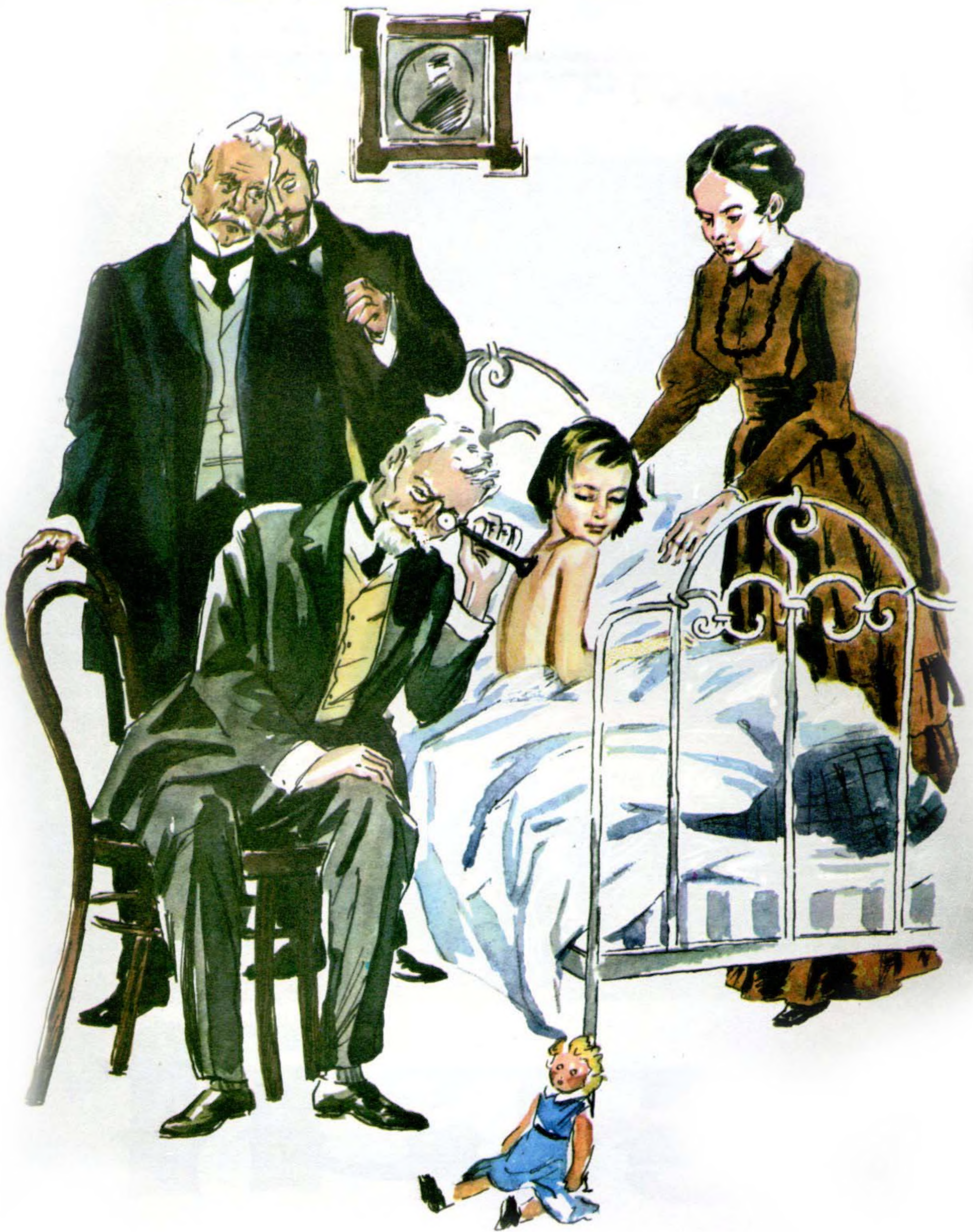
अलेक्सान्द्र कुप्रीन



हाथी



सर्वश्रेष्ठ रूसी और सोवियत बाल पुस्तकमाला

अलेक्सान्द्र कुप्रीन

हाथी

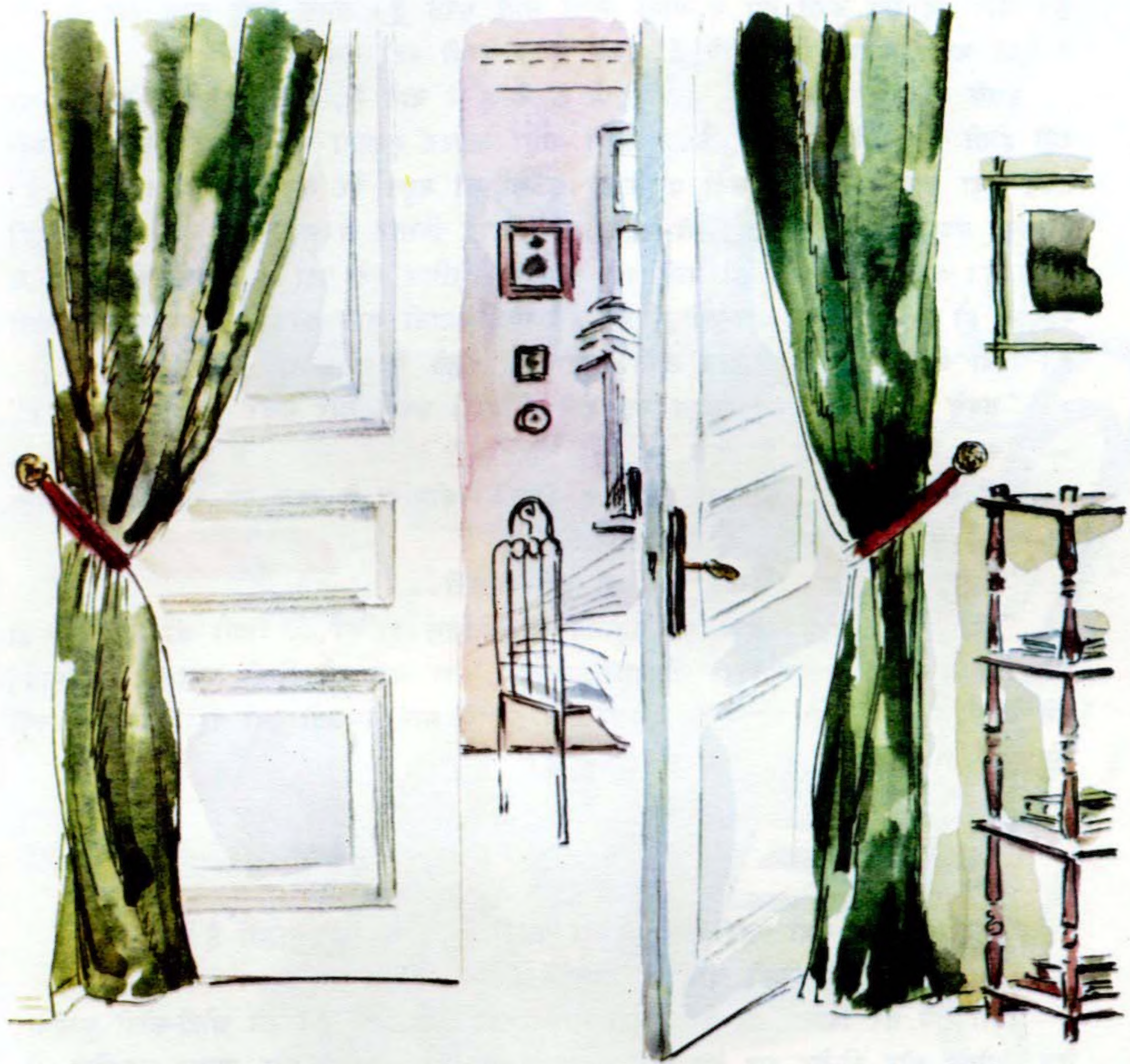
चित्रकार: द० बोरोव्स्की

अनुवादक: योगेन्द्र नागपाल



प्रगति प्रकाशन
मास्को





१

नन्ही बच्ची बीमार है। हर रोज़ डाक्टर मिख़ाईल पेत्रोविच उसे देखने आते हैं। वह डाक्टर को बहुत दिनों से जानती है। कभी-कभी डाक्टर अपने साथ दो और डाक्टरों को भी लाते हैं। उन्हें वह नहीं जानती है। वे नन्ही लड़की को कभी पीठ के बल लिटाते हैं, कभी पेट के बल, फिर उसके शरीर पर कान लगाकर कुछ सुनते हैं, पलकें उठाकर आंखों में देखते

हैं। ग्रौर यह सब करते हुए वे मानो गहरी सांसें भरते हैं। उनके चेहरे सख़्त होते हैं ग्रौर वे ऐसी भाषा में बातचीत करते हैं, जिसे नन्ही बच्ची नहीं समझती है।

इसके बाद वे नन्ही बच्ची के कमरे में से बैठक में जाते हैं, वहां मां उनका इंतज़ार कर रही होती हैं। ऊंचे क़द का, सफ़ेद बालों वाला डाक्टर सुनहरा चश्मा पहने होता है। वही सबसे बड़ा डाक्टर है। वह बड़ी गम्भीरता से मां को बहुत देर तक कुछ बताता रहता है। दरवाज़ा बंद नहीं किया होता, सो नन्ही बच्ची ग्रपने बिस्तर से सब कुछ देखती ग्रौर सुनती रहती है। वह उनकी बहुत सी बातें नहीं समझती, लेकिन उसे पता है कि बातचीत उसी के बारे में हो रही है। मां बड़ी-बड़ी, थकी हुई ग्रौर रुग्रांसी लाल ग्रांखों से डाक्टर को देखती हैं। विदा लेते समय बड़े डाक्टर ऊंची ग्रावाज़ में कहते हैं:

"सबसे बड़ी बात, उसे उदास मत होने दीजिये। उसके सारे नख़रे पूरे करते रहिये।"

"पर, डाक्टर, वह तो कुछ भी नहीं चाहती!"

"मैं क्या बताऊं... ग्राप ही कुछ याद कीजिये। बीमारी से पहले उसे क्या ग्रच्छा लगता था – कोई ख़ास खिलौने... कोई मिठाई..."

"नहीं, नहीं, डाक्टर, वह कुछ भी नहीं मांगती..."

"ख़ैर, किसी तरह उसका मन बहलाने की कोशिश कीजिये... किसी भी तरह, किसी भी चीज़ से... मैं ग्रापसे पक्का वायदा करता हूं, ग्रगर ग्राप उसे किसी तरह से हंसा पायें, उसे ख़ुश कर पायें, तो यह सबसे बढ़िया दवा होगी। ग्राप समझती क्यों नहीं, ग्रापकी बच्ची को कोई बीमारी नहीं है, वह बस उदास है।"

२

"प्यारी नाद्या, मेरी प्यारी बेटी," मां कहती हैं, "तू क्या चाहती है?"

"कुछ नहीं, मां, किसी चीज़ के लिए मेरा मन नहीं होता।"

"ला, मैं तेरे बिस्तर पर तेरी सारी गुड़ियों को बिठा देती हूं। हम छोटी-छोटी कुर्सियां, मेज़, सोफ़ा ग्रौर टी-सेट रख देते हैं। गुड़ियां बैठकर चाय पियेंगी ग्रौर गपशप लड़ायेंगी।"

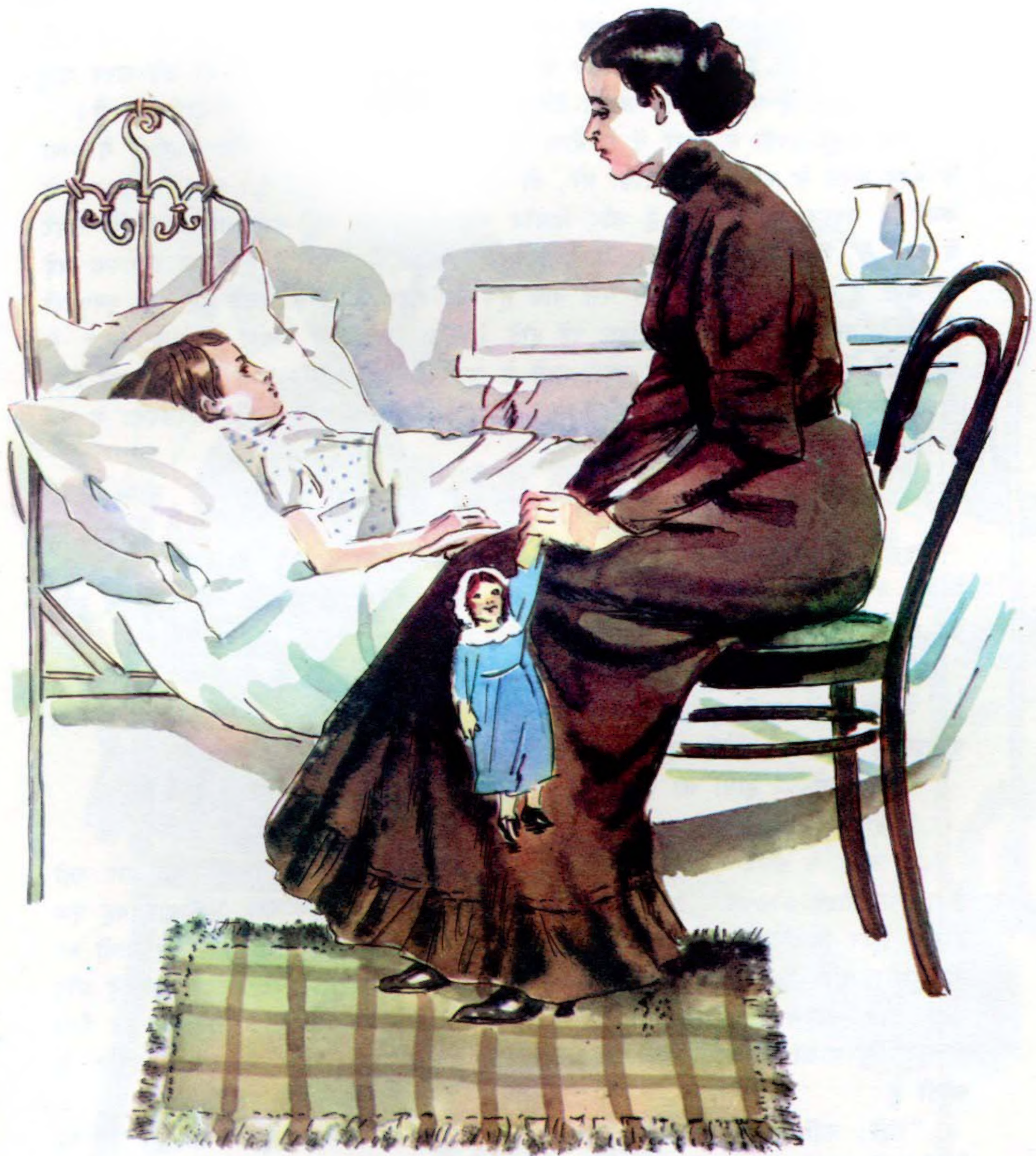
"शुक्रिया, मां... मेरा जी नहीं करता... किसी चीज़ को मन नहीं..."

"ठीक है, बेटी, ठीक है। गुड़ियां न सही। बोल, कात्या या जेन्या को बुला दूं? तू तो उन्हें बहुत प्यार करती है, न।"

"नहीं, मां, नहीं। मैं कुछ नहीं चाहती। बिल्कुल किसी भी चीज़ को मन नहीं है!"

"ग्रच्छा, तो तुझे चाकलेट ला देती हूं?"

नन्ही बच्ची कोई जवाब नहीं देती है ग्रौर ग्रपनी ग्रडोल, उदास ग्रांखों से छत को निहारती रहती है। उसे कहीं भी दर्द नहीं है, बुख़ार भी नहीं है। लेकिन वह दिन पर दिन दुबली ग्रौर



कमज़ोर होती जा रही है। उसके साथ चाहे जो भी करें, उसके लिए सब बराबर है। उसे कुछ नहीं चाहिए। और इसी तरह वह शांत, म्लान सी सारे-सारे दिन, सारी-सारी रातें लेटी रहती है। कभी-कभी उसे आधेक घंटे के लिए झपकी आ जाती है, किंतु नींद में भी उसे शरद ऋतु की वर्षा की तरह भीगा-भीगा, उकता देने वाला, बहुत लंबा सा सपना दिखाई देता है।

जब नन्ही बच्ची के कमरे में से बैठक का दरवाज़ा खुला होता है और बैठक में से पापा के काम करने के कमरे का दरवाज़ा भी, तो वह पापा को देख पाती है। पापा तेज़ क़दमों से कमरे में चक्कर लगाते रहते हैं और सिगरेट पीते रहते हैं। कभी-कभी वह बच्ची के कमरे में आते हैं, बिस्तर के किनारे पर बैठते हैं और नाद्या के पैर सहलाते हैं। फिर अचानक खड़े हो जाते हैं और खिड़की के पास चले जाते हैं। वह सड़क की ओर देखते हुए कुछ गुनगुनाते हैं, किंतु उस समय उनके कंधे हिल रहे होते हैं। फिर जल्दी से रूमाल को एक आंख से छुआते हैं, फिर दूसरी से, और मानो गुस्से से अपने कमरे को लौट जाते हैं। वहां वह फिर से एक कोने से दूसरे में चक्कर काटने लगते हैं और सिगरेट पीते रहते हैं... सिगरेट के धुएं से कमरा नीला पड़ जाता है।

३

एक दिन सुबह नन्ही बच्ची और दिनों से कुछ अधिक चुस्ती लिये उठती है। उसने सपने में कुछ देखा है, परंतु क्या देखा है, यह वह याद नहीं कर पा रही है। वह बड़े ध्यान से बहुत देर तक मां की आंखों में देखती रहती है।

"तुझे कुछ चाहिए, बेटी?" मां पूछती है।

लेकिन नन्ही बच्ची को अचानक अपना सपना याद आ जाता है और वह मां के कान में फुसफुसाती है, मानो कोई रहस्य की बात कह रही हो:

"मां, मुझे... हाथी ला दोगी? पर वह तस्वीर वाला नहीं... ला दोगी?"

"क्यों नहीं, मेरी बिटिया, क्यों नहीं, ज़रूर ला दूंगी।"

मां पापा के कमरे में जाती हैं और पापा से कहती हैं कि नन्ही बच्ची हाथी मांग रही है। पापा फ़ौरन कोट और टोपी पहनते हैं और कहीं चले जाते हैं। आधे घंटे बाद वह एक क़ीमती सुंदर खिलौना लेकर लौटते हैं। यह एक स्लेटी रंग का बड़ा सा हाथी है। हाथी का सिर और सूंड़ हिलते हैं। उसकी पीठ पर लाल हौदा है, हौदे पर सुनहरा छत्र है और उसमें तीन नन्हे-नन्हे, बित्ते भर के लोग बैठे हैं। लेकिन बच्ची खिलौने को भी वैसी ही उदासीन आंखों से देखती है, जैसे छत और दीवारों को, और मुरझायी आवाज़ में कहती है:

"नहीं, नहीं! मुझे यह नहीं चाहिए। मुझे सचमुच का, ज़िंदा हाथी चाहिए। यह तो खिलौना है—इसमें जान थोड़े ही है।"



"ज़रा देख तो, नाद्या," पापा कहते हैं। "अभी हम इसमें चाबी भरते हैं और यह एकदम सचमुच के हाथी जैसा हो जायेगा।"

पापा हाथी में चाबी भरते हैं और वह डोलता हुआ, सिर हिलाता हुआ धीरे-धीरे मेज़ पर चलने लगता है। बीच-बीच में वह सूंड़ झुलाता है। नन्ही लड़की को यह बिल्कुल भी नहीं भाता, उल्टे उसे उकताहट होती है। लेकिन पापा का दिल न दुखे, इसलिए वह धीमी आवाज़ में विनम्रता से कहती है:

"मेरे अच्छे पापा, बहुत-बहुत शुक्रिया। मेरे ख़्याल में किसी के पास ऐसा खिलौना नहीं है। लेकिन... पापा... याद है, एक बार तुमने कहा था कि मुझे जानवरों के तमाशे ले चलोगे, सचमुच का हाथी दिखाओगे... और फिर कभी नहीं ले गये।"

"पर, सुन तो, मेरी रानी बिटिया, हाथी यहां कैसे आ सकता है? हाथी बहुत बड़ा है, छत जितना ऊंचा; वह हमारे कमरों में नहीं आयेगा... और फिर मैं उसे लाऊंगा कहां से?"

"मुझे इतना बड़ा हाथी नहीं चाहिए, पापा... तुम मुझे छोटा सा ही ला दो, पर सचमुच का... भले ही इतना छोटा सा, हाथी का बच्चा ला दो।"

"ओफ़्फ़ो, मेरी अच्छी बेटी, मैं ख़ुशी-ख़ुशी तेरे लिए सब कुछ करूंगा, पर हाथी मैं नहीं ला सकता। यह तो वैसे ही है, जैसे अगर कल तू मुझे कहे: पापा मुझे आसमान से सूरज ला दो।"

नन्ही बच्ची के चेहरे पर एक उदासी भरी मुस्कान आ जाती है।

"पापा, तुम भी कैसी बुद्धू जैसी बातें करते हो। भला मुझे पता नहीं कि सूरज को नहीं लाया जा सकता, क्योंकि उसमें आग है! और चांद को भी नहीं लाया जा सकता। मुझे तो बस एक हाथी ला दो, छोटा सा सचमुच का हाथी।"

और वह धीरे से आंखें बंद करके फुसफुसाती है:

"मैं थक गयी हूं, पापा... मुझे आराम करने दो..."

पापा झुंझलाहट में अपने बाल नोच लेते हैं और अपने कमरे में भागे चले जाते हैं। वहां वह कुछ देर तक तेज़ क़दमों से चक्कर काटते रहते हैं। फिर अचानक सुलगती सिगरेट फ़र्श पर फेंक देते हैं (मां हमेशा उन्हें इसके लिए डांटती हैं) और नौकरानी को आवाज़ देते हैं:

"ओल्गा! कोट और टोपी लाओ!"

मां ड्योढ़ी में निकल आती हैं।

"साशा, तुम किधर चल दिये?" वह पूछती हैं।

पापा कोट के बटन बंद करते हुए गहरी सांस लेते हैं।

"माशा, मैं ख़ुद नहीं जानता, मैं कहां जा रहा हूं... पर लगता है, आज शाम तक मैं सचमुच ही यहां ज़िंदा हाथी ले आऊंगा।"

मां चिंतित नज़रों से पापा को देखती हैं।

"तुम ठीक तो हो, न? सिर में दर्द तो नहीं? शायद आज रात को तुम्हें ठीक से नींद नहीं आयी?"

"मैं बिल्कुल नहीं सोया," पापा ग़ुस्से से जवाब देते हैं। "तुम यही पूछना चाहती हो, न कि मैं... कि मेरा सिर तो नहीं फिर गया? अभी तक तो नहीं। अच्छा, मैं चला! शाम तक सब पता चल जायेगा।"

और वह ज़ोर से बाहर का दरवाज़ा बंद करके कहीं चले जाते हैं।

४

दो घंटे बाद पापा जानवरों के सर्कस में पहली क़तार में बैठे हैं और सधे हुए जानवरों का तमाशा देख रहे हैं। मालिक के इशारों पर जानवर तरह-तरह के करतब दिखाते हैं। होशियार कुत्ते छलांगें लगाते हैं, कलाबाज़ियां खाते हैं, बाजे के साथ गाते, नाचते हैं और "पढ़े-लिखे" कुत्ते गत्ते के बड़े-बड़े अक्षरों से शब्द बनाते हैं। बंदरियों ने लाल घघरियां पहन रखी हैं, और बंदर नीली पतलूनें पहने हुए हैं। वे रस्सी पर चलते हैं और बड़े से कुत्ते पर सवारी करते हैं। बड़े-बड़े भूरे बबर शेर जलते हुए घेरों में से छलांगें लगाते हैं। बेढब सील पिस्तौल दाग़ता है। आख़िर में तीन हाथियों को लाया जाता है। एक बहुत ही बड़ा है और दूसरे दो छोटे बौने से हैं, फिर भी वे घोड़ों से तो ऊंचे ही हैं। यह देखकर तो अचम्भा ही होता है कि ये विशाल जानवर, जो देखने में बेडौल और भारी-भरकम हैं, ऐसे-ऐसे मुश्किल करतब दिखाते हैं, जो किसी फुर्तीले आदमी के बस की भी बात नहीं है। सबसे बड़े हाथी की तो बात ही न पूछो, वह पहले अपने पिछले पैरों पर खड़ा होता है, फिर बैठ जाता है और फिर सिर के बल खड़ा होकर पैरों को ऊपर उठा लेता है। वह लकड़ी की बोतलों पर चलता है, लुढ़कते गोल पीपे पर चलता है, गत्ते की बड़ी सी किताब के पन्नों को सूंड़ से पलटता है और अंत में वह मेज़ पर बैठता है और नैपकिन बंधवाकर तहज़ीबदार बच्चे की तरह खाना खाता है।

तमाशा ख़त्म होता है। दर्शक उठकर चले जाते हैं। नाद्या के पापा सर्कस के मालिक मोटे जर्मन के पास जाते हैं। मालिक लकड़ी के पट्टों की नीची सी दीवार के दूसरी तरफ़ खड़ा है। उसके मुंह में बड़ा सा काला सिगार है।

नाद्या के पापा उसे कहते हैं:

"माफ़ कीजिये! मैं आपसे एक विनती करना चाहता हूं। क्या आप थोड़ी देर के लिए अपने हाथी को मेरे घर भेज सकते हैं?"

जर्मन आश्चर्य से आंखें फाड़ लेता है और मुंह भी, जिसमें से उसका सिगार ज़मीन पर



गिर पड़ता है। वह कांखते हुए झुकता है, सिगार उठाता है, उसे मुंह में लगा लेता है और तब जाकर पूछता है:

"भेज दूं? हाथी को? आपके घर? मैं कुछ समझा नहीं।"

जर्मन की आंखों से साफ़ ज़ाहिर होता है कि वह भी यह पूछना चाहता है कि कहीं नाद्या के पापा के सिर में दर्द तो नहीं... पर पापा जल्दी-जल्दी समझाते हैं कि बात क्या है: उनकी इकलौती बेटी नाद्या को कोई अजीब सी बीमारी लग गयी है, जिसे डाक्टर भी ठीक से नहीं समझ पा रहे हैं। वह महीने भर से चारपाई पर लेटी हुई है, दिन पर दिन पतली और कमज़ोर होती जा रही है। उसे किसी चीज़ में भी रुचि नहीं है। वह ऊब रही है और धीरे-धीरे मुरझा रही है। डाक्टरों ने उसका दिल बहलाने को कहा है, पर उसे कुछ भी तो अच्छा नहीं लगता। डाक्टर कहते हैं, उसकी सभी इच्छाएं पूरी करो, पर उसकी कोई इच्छा ही नहीं है। आज



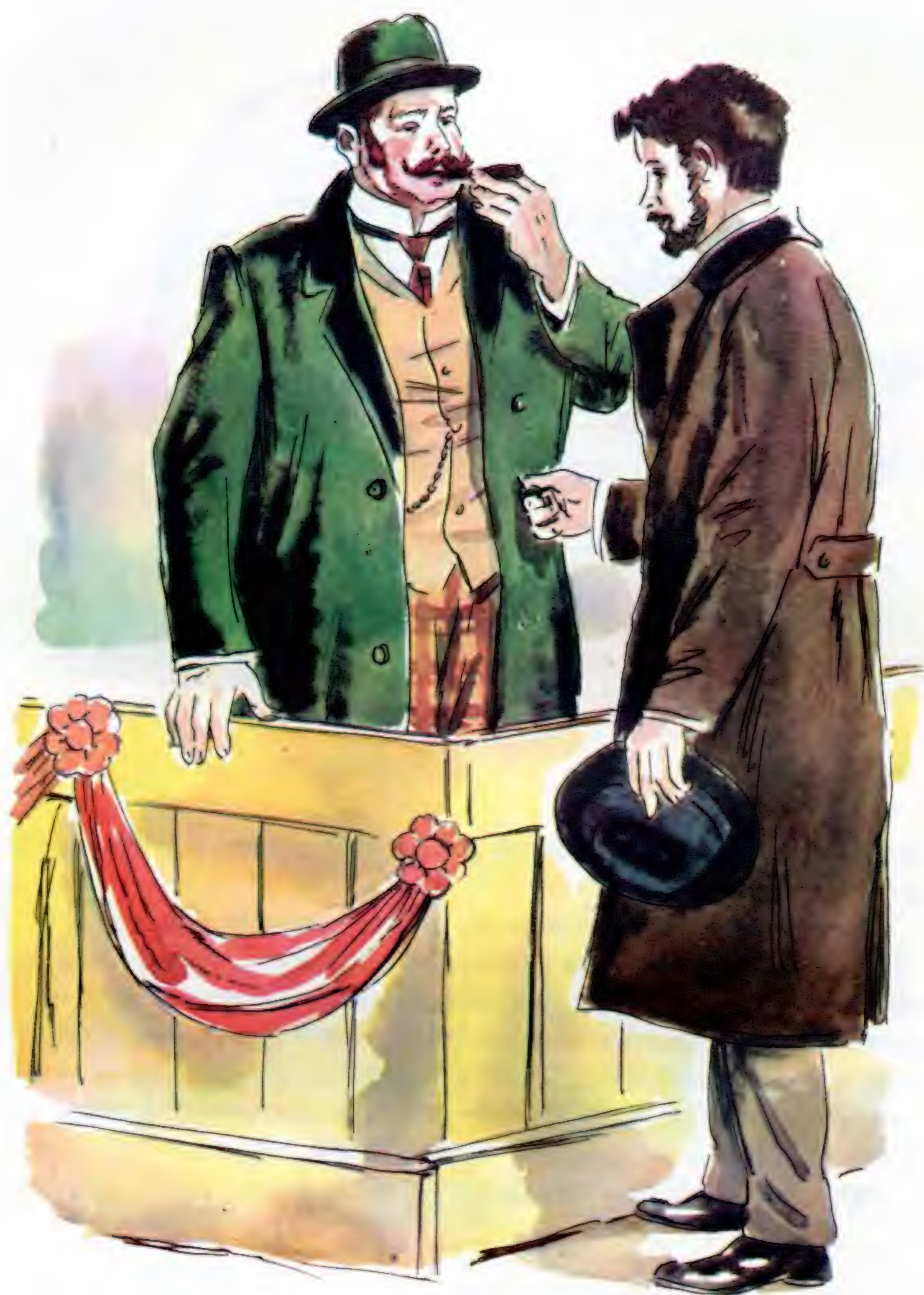
उसे जीता-जागता हाथी देखने की इच्छा हुई है। क्या उसकी यह बात किसी भी तरह पूरी नहीं की जा सकती?

और वह जर्मन के कोट का बटन पकड़कर कांपती हुई आवाज़ में कहते हैं:

"देखिये न... मुझे पक्की उम्मीद है कि मेरी बेटी ठीक हो जायेगी। लेकिन... लेकिन... कहीं उसकी बीमारी ठीक न हुई... और अचानक बच्ची की मौत हो गई, तो?.. ज़रा सोचिये तो सही: मुझे जीवन भर चैन नहीं मिलेगा कि मैं अपनी बेटी की आख़िरी इच्छा पूरी न कर सका, उसकी सबसे आख़िरी इच्छा!.."

जर्मन नाक-भौंह सिकोड़ता है और कुछ सोचता हुआ छोटी उंगली से बायीं भौंह को खुजलाता है। आख़िर में वह पूछता है:

"हुं... आपका बेटी कितने साल का है?"



"छह साल की।"

"हुं... मेरा बेटी लीज़ा भी छह साल का है... पर, जानता है, आपको बहुत पैसा देना पड़ेगा। हाथी को रात को ले जाना होगा और अगली रात को ही उसे वापिस लाया जा सकता है। दिन में यह हरगिज़ नहीं किया जा सकता। भीड़ इकट्ठा हो जायेगा और कोई झंझट खड़ा हो जायेगा... इस तरह हम एक सारा दिन खोता है और इस घाटे को आप ही को पूरा करना पड़ेगा।"

"हां, हां, ज़रूर... आप इस बारे में फ़िक्र न कीजिए..."

"और फिर, क्या पुलिस एक हाथी को एक घर में ले जाने देगी?"

"इसका प्रबंध मैं कर लूंगा।"

"एक बात और है। क्या आपका मकान मालिक अपने मकान में एक हाथी को लाने देगा?"

"लाने देगा। मैं ख़ुद ही इस मकान का मालिक हूं।"

"आहा। यह तो बहुत ही अच्छा बात है। बस एक सवाल और है: आप कौनसा मंज़िल पर रहता है?"

"दूसरी मंज़िल पर।"

"हुं... यह बात इतना अच्छा नहीं... क्या आपके घर में चौड़ा ज़ीना, ऊंचा छत, बड़ा कमरा, चौड़ा-चौड़ा दरवाज़ा और बहुत मज़बूत फ़र्श है? बात यह है कि हमारा टॉमी साढ़े सात फ़ुट ऊंचा और तेरह फ़ुट लंबा है। इसके अलावा उसका वज़न पैंतालिस मन है।"

नाद्या के पापा क्षण भर के लिए सोच में पड़ जाते हैं। फिर वह कहते हैं:

"चलिये, एक काम करते हैं! इसी समय हमारे यहां चलते हैं और वहीं सब कुछ देख-दाख लेते हैं। अगर ज़रूरी होगा तो मैं दरवाज़े चौड़े करवा लूंगा।"

"अच्छा बात है!" सर्कस का मालिक राज़ी हो जाता है।

५

रात हो गयी है। हाथी को बीमार बच्ची के यहां ले जाया जा रहा है।

सफ़ेद अंबारी से ढका हुआ, वह सड़क के बीचोंबीच शान से आगे बढ़ा जा रहा है। वह कभी सिर हिलाता है, तो कभी सूंड़ को सिकोड़ लेता है और कभी उसे ऊपर उठा लेता है। इतनी रात है, फिर भी उसके चारों ओर भीड़ इकट्ठी हो गयी है। पर हाथी उसकी ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रहा है: वह तो रोज़ ही सर्कस में सैकड़ों लोगों को देखता है। केवल एक बार उसे थोड़ा सा ग़ुस्सा आ जाता है।

एक आवारा लड़का भागकर उसके पैरों के बीच खड़ा हो जाता है और देखने वालों को हंसाने के लिए मुंह बनाने लगता है।





तब हाथी चुपचाप अपनी सूंड़ से उसकी टोपी उठाता है और कांटेदार बाड़ के दूसरी ओर फेंक देता है।

पुलिस का सिपाही भीड़ के बीच चल रहा है और लोगों से कह रहा है:

"जनाब, यह भीड़ ख़त्म कीजिये। पता नहीं, क्या मज़ा आ रहा है आप लोगों को? अजीब लोग हैं! ऐसे मजमा लगा लिया है मानो कभी जीते-जागते हाथी को सड़क पर नहीं देखा है।"

घर आ गया है। ज़ीने से लेकर खाने के कमरे तक हाथी के रास्ते में पड़ने वाले सभी दरवाज़ों को पूरी तरह से खोल दिया गया है।

पर ज़ीने के सामने हाथी रुकता है और बेचैन होकर अड़ जाता है।

जर्मन कहता है:

"इसे कोई पकवान देना चाहिए... मीठी पाव-रोटी या कोई... चल... टॉमी! हो, होहो... टॉमी!"

नाद्या के पापा दौड़े-दौड़े पास की दुकान में जाते हैं और पिस्तेवाला एक बड़ा गोल केक ले आते हैं। हाथी तो पूरा का पूरा केक गत्ते के डिब्बे समेत हड़प करना चाहता है, पर जर्मन उसे केवल एक चौथाई ही देता है। केक टॉमी को बहुत पसंद आता है और वह दूसरा टुकड़ा पाने के लिए सूंड़ आगे बढ़ाता है। परंतु जर्मन चालाक है। हाथ में केक का टुकड़ा पकड़े वह धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगता है और हाथी न चाहते हुए भी अपनी सूंड़ आगे बढ़ाए, कानों को फैलाकर उसके पीछे-पीछे चढ़ने लगता है। ऊपर चढ़ने के बाद टॉमी को दूसरा टुकड़ा मिलता है।

इस तरह उसे खाने के कमरे में लाया जाता है, जहां से मेज़-कुर्सियां पहले ही निकाली जा चुकी हैं और फ़र्श पर भूसे की मोटी तह बिछाई गयी है... हाथी के पैर को फ़र्श में जड़े कुंदे से बांध दिया जाता है। उसके सामने ताज़ी गाजरें, बंदगोभी और शलजम रखे जाते हैं। जर्मन उसके पास ही सोफ़े पर लेट जाता है। बत्तियां बुझाई जाती हैं और सब सो जाते हैं।

६

अगले दिन बच्ची बहुत सुबह ही जाग पड़ती है और जागते ही पूछती है:

"हाथी का क्या हुआ? वह आ गया है?"

"हां, आ गया है," मां उत्तर देती हैं, "पर उसने कहा है कि नाद्या पहले हाथ-मुंह धो ले, उसके बाद उबला अंडा खा ले और गर्म दूध पी ले।"

"क्या हाथी भला है?"

"हां, वह भला है। खा, मेरी बच्ची, खा। अभी हम उसके पास जायेंगे।"

"और उसे देखकर हंसी आती है?"

"थोड़ी-थोड़ी। गरम जाकेट पहन ले।"

नाद्या जल्दी से अंडा खा लेती है, दूध भी पी लेती है। तब उसे बच्चा गाड़ी में बिठाया जाता है। जब वह बिल्कुल छोटी सी थी और चल नहीं सकती थी, तो उसे इसी बच्चा गाड़ी में बिठाते थे। गाड़ी में उसे खाने के कमरे में लाया जाता है।

हाथी तो बहुत ही बड़ा है। हाथी की तस्वीर देखकर तो नाद्या ने सोचा भी नहीं था कि वह इतना बड़ा हो सकता है। उसकी ऊंचाई तो बस दरवाज़े से थोड़ी सी कम है और लंबा तो वह इतना है कि उसने खाने का आधा कमरा घेर रखा है। उसकी खाल तो एकदम सूखी और

मोटी है और कितनी ही झुर्रियां हैं उसमें। पैर बिल्कुल खंभों की तरह मोटे हैं। लम्बी सी पूंछ के छोर पर झाड़न सा कुछ है। सिर पर बड़े-बड़े गुमटे हैं। अरबी के पत्तों जैसे बड़े-बड़े कान नीचे को लटके हुए हैं। आंखें तो एकदम छोटी-छोटी हैं, परंतु उनसे वह बहुत ही समझदार और दयालु लगता है। दांत उसके कटे हुए हैं। सूंड़ तो बड़े से सांप की तरह है और उसके आख़िर में दो नथुने हैं, जिनके बीच में एक लचकीली उंगली सी है। अगर हाथी अपनी पूरी सूंड़ ऊपर उठा ले, तो वह खिड़की तक पहुंच जायेगी।

बच्ची बिल्कुल भी नहीं डर रही है। हां, उसे थोड़ा आश्चर्य ज़रूर हो रहा है इतना बड़ा जानवर देखकर। पर सोलह साल की आया पोल्या तो डर के मारे चीख ही रही है।

हाथी का मालिक, जर्मन, बच्चा गाड़ी के पास आता है और कहता है:

"नमस्ते, मुनिया! डरो नहीं। टॉमी बहुत अच्छा है। और बच्चों को तो बहुत ही प्यार करता है।"

बच्ची जर्मन की ओर अपना नन्हा सा, पीला सा हाथ बढ़ा देती है।

"नमस्ते जी, आप कैसे हैं?" वह उत्तर में कहती है। "मैं तो रत्ती भर भी नहीं डरी हूं। इसका नाम क्या है?"

"टॉमी।"

"नमस्ते, टॉमी जी," बच्ची सिर झुकाकर नमस्ते करती है। हाथी क्योंकि बहुत बड़ा है, इसलिए वह उसे "जी" कहकर ही बुलाती है। "आपको आज रात नींद कैसी आयी?"

वह उसकी ओर भी अपना हाथ बढ़ाती है। हाथी बड़ी सावधानी से उसका हाथ लेता है और अपनी लचकीली उंगली से कोमलता के साथ उसकी पतली-पतली उंगलियों को दबाता है। डाक्टर मिख़ाईल पेत्रोविच भी उसका हाथ इतनी कोमलता से नहीं दबाते। साथ ही हाथी अपना सिर भी हिलाता है और उसकी आंखें सिकुड़ जाती हैं, मानो वह हंस रहा हो।

"यह तो सब कुछ समझता है, न?" बच्ची जर्मन से पूछती है।

"हां, मुनिया, बिल्कुल सब कुछ।"

"बस वह बोलता नहीं है?"

"हां, बस बोलता नहीं है। जानती हो, मुनिया, हमारा भी एक बेटी है, तुम्हारी तरह ही नन्हा सा। उसका नाम लीज़ा है। टॉमी और वह बहुत ही अच्छे दोस्त हैं।"

"टॉमी जी, आपने चाय पी ली है?" बच्ची हाथी से पूछती है।

हाथी फिर से अपनी सूंड़ उठाता है और बच्ची के चेहरे पर गरम-गरम, तेज़ फूंक मारता है, इससे बच्ची के हल्के-हल्के बाल चारों ओर उड़ते हैं।

नाद्या ज़ोर-ज़ोर से हंसती है और तालियां बजाती है। जर्मन ठट्ठाकर हंसता है।

वह भी हाथी की ही तरह बड़ा, मोटा और दयालु है। नाद्या को लगता है कि हाथी और जर्मन एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं। क्या पता वे रिश्तेदार हों?

"नहीं, मुनिया, उसने चाय नहीं पी है। पर वह बड़ी ख़ुशी से मीठा पानी पीता है। और उसे मीठी पाव-रोटी बहुत अच्छी लगती है।"

मीठी पाव-रोटियों से भरी ट्रे लाई जाती है। बच्ची हाथी को पाव-रोटी देती है। वह बड़ी होशियारी से पाव-रोटी को अपनी उंगली से पकड़ता है और सूंड़ को छल्ले की तरह मोड़कर उसे अपने सिर के नीचे कहीं छिपा लेता है, जहां उसका अजीब सा, बालों वाला तिकोना होंठ चल रहा है। पाव-रोटी के सूखी चमड़ी के साथ रगड़ने की आवाज़ आती है। दूसरी पाव-रोटी को भी हाथी वैसे ही छिपा लेता है, फिर तीसरी को और चौथी को, और पांचवीं को भी और नाद्या को अपना आभार दिखाने के लिए वह सिर हिलाता है और उसकी छोटी-छोटी आंखें ख़ुशी के मारे और भी सिकुड़ जाती हैं। और बच्ची ख़ुशी से लोट-पोट होती जाती है।

जब सब पाव-रोटियां ख़त्म हो जाती हैं, तो नाद्या हाथी को अपनी गुड़ियां दिखाती है:

"देखिये, टॉमी जी, यह सजी हुई छोटी गुड़िया है न—इसका नाम सोन्या है। वैसे तो यह बहुत अच्छी है, पर कभी-कभी नख़रे करती है और सूप नहीं पीना चाहती। और यह नताशा है—सोन्या की बेटी। यह अब पढ़ने लगी है और इसे लगभग सारे अक्षर आते हैं। और यह है मत्र्योश्का। यह मेरी सबसे पुरानी गुड़िया है। देखिये न, इसकी नाक भी नहीं है और





सिर भी गोंद से जोड़ा हुआ है और बाल भी अब नहीं रहे। पर फिर भी बुढ़िया को घर से तो नहीं निकाला जा सकता। ठीक है न, टॉमी? पहले यह सोन्या की मां थी और अब हमारे यहां रसोई में काम करती है। चलिये, टॉमी जी, खेलते हैं – आप पापा होंगे और मैं मां और ये सब हमारे बच्चे होंगे।"

टॉमी राज़ी है। वह हंस रहा है। वह मत्र्योश्का की गर्दन पकड़कर उसे उठाता है और उसे अपने मुंह में डालता है। पर यह तो बस मज़ाक ही है। गुड़िया को हल्के से चबाकर, वह उसे वापिस बच्ची के घुटनों पर रख देता है, हां अब गुड़िया थोड़ी गीली और मुड़ी हुई सी ज़रूर है।

फिर नाद्या उसे तस्वीरों वाली बड़ी किताब दिखाती है और बताती है:

"यह घोड़ा है, यह है कनारी चिड़िया, यह बंदूक... यह रही पिंजड़े में बंद चिड़िया, यह है बाल्टी, शीशा, भट्टी, फावड़ा, कौआ... और यह देखिये, यह हाथी है। बिल्कुल भी हाथी जैसा नहीं है, है न? कहीं हाथी भी इतने छोटे होते हैं, क्यों टॉमी जी?"

टॉमी का ख़्याल है कि दुनिया में इतने छोटे हाथी कहीं नहीं होते। वैसे भी उसे यह तस्वीर बिल्कुल अच्छी नहीं लगती। वह अपनी लचकीली उंगली से पेज का कोना पकड़ता है और उसे पलट देता है।

खाने का समय हो गया है, पर बच्ची तो हाथी के पास से हटना ही नहीं चाहती है। जर्मन को एक तरीक़ा सूझता है। वह कहता है:

"मैं सब इंतज़ाम कर देता हूं। वे दोनों इकट्ठे खाना खायेंगे।"

वह हाथी को बैठने को कहता है। हाथी उसका कहना मानकर बैठ जाता है। उसके बैठने से सारे मकान में फ़र्श हिल उठता है, अलमारी में बर्तन खड़खड़ा उठते हैं, और नीचे रहने वालों की छत का पलस्तर गिरता है। हाथी के सामने बच्ची बैठती है। उनके बीच में मेज़ रखी जाती है। हाथी की गर्दन पर मेज़पोश बांधा जाता है और नये दोस्त खाना शुरू करते हैं। बच्ची मुर्ग़ी का शोरबा और कटलेट खाती है और हाथी तरह-तरह की सब्ज़ियां और सलाद। बच्ची को थोड़ा सा आसव दिया जाता है और हाथी को एक गिलास रम के साथ गरम पानी दिया जाता है और वह बड़े मज़े से उसे अपनी सूंड़ से पीता है। फिर उन्हें मीठा दिया जाता है: बच्ची को एक कप कोको और हाथी को आधा केक, इस बार केक अख़रोट वाला है। जर्मन भी इस समय बैठक में पापा के साथ बैठा हाथी की तरह ही मज़े से बियर पी रहा है, पर हां, वह हाथी से कहीं ज्यादा पीता है।

खाने के बाद पापा के जान-पहचान के कुछ लोग आते हैं: उन्हें ड्योढ़ी में ही हाथी के बारे में बता दिया जाता है, ताकि वे डर न जायें। पहले तो उन्हें यक़ीन ही नहीं आता, पर बाद में टॉमी को देखकर वे दरवाज़े से सटकर खड़े हो जाते हैं।

"डरिये नहीं, टॉमी बहुत अच्छा है!" बच्ची उन्हें समझाती है।





लेकिन वे लोग जल्दी-जल्दी बैठक में जाते हैं और पांच मिनट भी बैठे बिना चले जाते हैं।

शाम हो जाती है। बहुत देर हो गयी है। बच्ची के सोने का समय हो गया है। परंतु वह हाथी के पास से हिलना ही नहीं चाहती है। वह वहीं सो जाती है और उसे सोती-सोती कमरे में ले जाया जाता है। उसे पता भी नहीं चलता कैसे उसके कपड़े उतारे जाते हैं।

इस रात को नाद्या सपने में देखती है कि उसकी शादी हाथी से हो गयी है और उनके बहुत सारे बच्चे हैं, छोटे-छोटे हंसते-खेलते हाथी के बच्चे। रात को हाथी को सर्कस वापिस ले जाया जाता है। वह भी सपने में प्यारी-प्यारी, लाड़ली बच्ची को देखता है। इसके अलावा उसे सपने में फाटक जितने बड़े-बड़े, अख़रोट और पिस्ते के केक दिखाई देते हैं...

सुबह बच्ची उठती है, वह बिल्कुल चुस्त और ताज़ी है, ठीक वैसे ही जैसे कि वह बीमारी से पहले थी। उठते ही वह बड़े ज़ोर से बेसब्री के साथ चिल्लाती है:

"दू–ऊ–ध लाओ!"

उसकी चीख़ सुनकर मां ख़ुशी से भागी आती हैं।

लेकिन बच्ची को अचानक कल की याद आ जाती है और वह पूछती है:

"हाथी कहां गया?"

मां उसे समझाती हैं कि हाथी अपने घर लौट गया है, वहां उसके बच्चे हैं, जिन्हें अकेले नहीं छोड़ा जा सकता और बताती हैं कि हाथी ने नाद्या को नमस्ते कहने को कहा है और कहा है कि जब वह ठीक हो जायेगी, तो उसके घर आये।

बच्ची के होंठों पर चालाकी भरी मुस्कान आ जाती है। वह कहती है:

"टॉमी को बता दो, मैं बिल्कुल ठीक हो गयी हूं!"



А. Куприн

СЛОН

на языке хинди

К $\frac{70802\text{-}622}{014(01)\text{-}81}$ 674-81

4803010101



